अन्तर्मन

काव्य संग्रह

संजय एस. बर्वे

अन्तरा-शब्दशक्ति
प्रकाशन

अंतर्मन

काव्य संग्रह

संजय एस. बर्वे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - "978-93-5372-047-6"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक -।ntrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **संजय एस. बर्वे**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

ANTARMAN BY SANJAY S. BARVE

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

।। कहता है मेरा अंतर्मन ...।।

हमारा मन तो चंचल होता है। यह हमें स्थिर नही होने देता। हमें शांति से जीवन जीने नही देता। यह इतना व्यग्र होता है कि कोई भी काम ठीक से करने नही देता। इतना ही नही यह सद्विचारों में खलल पैदा करता है। सत्कार्य करने नही देता। हमें लालच देता रहता है। स्वार्थभोगिता की ओर ले जाने को तत्पर रहता है। मनुष्यता से दूर रखने के लिये सदा लालायित रहता है।

हमारे संतजनों ने हमें इस चंचल मन पर अंकुश धारने को कहा है। साथ ही साथ अंतर्मन की राह लखाई है। इसलिये हमें चाहिये कि हम अपने मन से बेझिझक बातें करते रहें। अपना अंतर्द्वन्द्व सुलझाये। इसकी मौलिक बातें ध्यान से सुने। सद्विवेकबुद्धि से काम लें। क्योंकि ये हमें राह दिखाता है। हमारी गलतियों से पृथक करता है। सत्पथ पे चलाता है। सत्य का आईना दिखाता है। इसी के परिणाम में हमारा निहित मार्ग प्रशस्त हो सकता है। हालांकि यह कार्य बहुत ही कठिन है पर यह उतना ही फलदायी है। इसलिये अपने अंतर्मन की सुनना जरूरी है।

इसी अंतर्मन की आवाज ने हमेशा मुझे सजग किया है। मैं और मेरा अंतर्मन अक्सर बातें करते रहते हैं। यही बातों का सिलसिला यहां तक पहुंचा कि अगर तू न होता तो यह काव्य संग्रह भी नही होता ....। अंतर्मन के इन मौलिक बोलों को कलम से उतारकर इस द्वितीय हिन्दी ''अंतर्मन'' काव्य संग्रह यह शीर्षक दिया है। मेरे बेटे स्वप्निल और स्वानंद भी मेरे अंतर्मन के साक्षी रहे है। अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन एवं संस्था ने इस दशम साहित्यकृति का प्रकाशन कर मेरे अंतर्मन को बलिष्टता प्रदान की है। अतः मैं उनका अत्यंत आभारी हूं। आशा करता हूं कि पाठकगण इस ''अंतर्मन'' साहित्यकृति का अवश्य स्वीकार करेंगे।

संजय सुक्रितदास बर्वे
कोष्टीपुरा, सीताबर्डी,
नागपुर ४४००१२
धुमंतू भाष - ९९२११६६९३८

।। शुभकामना संदेश।।

श्री संजय बर्वे के बारे में सोचा जाये तो उनके साहित्य ने समाज को चेतना देने का काम किया है। साहित्य के क्रांतिकारक महंत संजय बर्वे आज सुरज की तरह चमक रहे है। उनकी साहित्य की रोशनी लोगों को लुभा रही है। उनके साहित्य ने समाज के साथ-साथ धर्म, पंथ तथा धम्मके लोगों को जोड दिया है। उन्होनें अपना सुरज जैसा चमकता जीवन भारत को अर्पित किया है। पूरा जीवन समाज प्रबोधन के लिये लगा रखा है। वे अपने प्रंगल्भ विचार से समाज का परिवर्तन कर रहे है।

साहित्य लेखन के साथ ही उन्होनें संत कबीरदास के साहित्य पर महत्वपूर्ण संशोधन किया है। इस महानतम साहित्य ने संजय बर्वे को महान बना दिया है। वे कबीर पंथ के महंत के रूप में संत कबीर जी के दास बन गये। वे प्रेरणादायी व्यक्ति है।

संजय बर्वे विक्रमशाली हिन्दी विद्यापीठ, महाराष्ट्र के उपाध्यक्ष पदपर कार्यरत रहकर हिन्दी की सेवा कर रहे है। वे विद्यापीठ के साहित्यकारों की विद्धानों के टीम में शामिल है। उन्हे विद्यावाचस्पती, विद्यासागर, भारत गौरव, हिन्दी रत्न, साहित्य रत्न जैसे सारस्वत सम्मान प्राप्त हुये है।

अपने साहित्य में मानवता, प्रेम, सदाचार, भक्तिभाव, आत्मा परमात्मा, अध्यात्म, संस्कार, राष्ट्रीय भावना, कर्तव्य, जिम्मेदारी, परोपकार, रिद्धी-सिद्धी, योग, निसर्ग, पर्यावरण, कला, संगीत आदि विषयों में इंसान को आदर्श जीवन सिखाने का महत्वपूर्ण काम संजय बर्वे ने किया है।

मैं आधुनिक २१वीं शताब्दी के महान क्रांतिकारक कवि उनको मानता हूं और संत कबीर साहित्य के संशोधक, चित्रकार, साहित्यकार तथा महंत संजय बर्वे जी को तहे दिल से सलाम करता हूं। इसी श्रृंखला में यह प्रेरक हिन्दी कविता संग्रह प्रदर्शित हो रहा है। इसके लिये उन्हे अनंत शुभकामनाऐं देता हूं।

डॉ.संभाजी बाविस्कर
अध्यक्ष विक्रमशीला हिन्दी विद्यापीठ
शाखा मुंबई (महाराष्ट्र)

अनुक्रमणिका

1.	भजन	7
2.	शुभ प्रभात	8
3.	कहता है मेरा अंतर्मन	9
4.	शब्द साधना करो	10
5.	गझल बन गई जिंदगी	11
6.	शंखनाद	12
7.	कुम्हारन	13
8.	हमसफर	14
9.	मनमीत	15
10.	बरसो रे मेघा	16
11.	भरी बरसात में	17
12.	कृषिवत	18
13.	बाल दिवस	19
14.	शिक्षक दिन	20
15.	हिन्दी	21
16.	कश्मीर हमारा है	21
17.	सामाजिक चेतना	22
18.	जिन्दगी	23
19.	नशाबाजी बुरी बला	24
20.	होली	25
21.	क्या कहने	26

22.	मजदूर हूं मैं	**27**
23.	जीत	**27**
24.	प्रार्थना	**28**
25.	धड़कन	**29**
26.	चांद	**29**
27.	दीर्घायु	**30**
28.	घायल आत्मा	**31**
29.	लाजवाब	**32**

भजन

दोहा :- नमो नमो शरणागती, नमो कबीर कृपाल।
जीवन में बहार लाती, बिठूजी से निहाल।।

आज देवशायनी महाएकादश, चलो पंढरपुर को चलते है।
सगुण रूप में निगुर्ण ब्रह्म, बिठ्ठल के दर्शन करते है।। धृ०।।

युगों से खड़ा विट पर, वो ही श्री कृष्ण परमात्मा है।
उसकी लीला अपरम्पार, साधु संतो को वो प्यारा है।।१।।

नामदेव था बड़ा हटेला, उसने प्रेम से दूध पिलाया है।
अंतर्बाहय केशव भरेला, विठूनाम ही लगे प्यारा है।।२।।

चंद्रभागा के महन तट पर, वैष्णवों से भरा मेला है।
टाल मृदंग के ताल पर, भक्ति का रस अलबेला है।।३।।

नामदेव और कबीर ने, भारत में किया बोलबाला है।
कमाल साहब साक्ष्य दे, कहे ये हरी अलबेला है।।४।।

सांवली मुर्ति पीताम्बर धारी, मन को लगे बड़ा प्यारा है।
प्यारा उसे बुक्का तुलसी, वो भावभक्ति का भूखा है।।५।।

मनोहर ध्यान हाथ कटी पर, खड़ा पंढरपूरवाला है।
संजयदास कहे विठूनाम से, जीवन का उजियारा हे।।६।।

शुभ प्रभात

अब रजनी चली गगन से
प्रभात की बेला आने में,
दिनकर की पहली लाली से
स्वर्ण रश्मियां फैलाने में।

भोर का चमकता तारा
समाया रजनी कुंतल में,
अंध कूप सृष्टि गृह का
नहाया रवि किरण में

प्रकृति दिखे अभिनंदन में
सब जीवों के नमन में,
पुण्य धरा पर प्यार घिरा
माता पिता के वंदन में।

शुभ प्रभात कहने आई
करते जग अभिवादन में,
करो नेह स्वीकार करो
मम कोटिक वंदन में।।

कहता है मेरा अंतर्मन

जब शांत निश्चल होकर
बैठता हूं सब भुलकर,
झांकता हूं मन के भीतर
कहता है मेरा अंतर्मन।

सच झूठ परचाने को
विषयों से दूर हटने को,
सदा जीवन जीने को
कहता है मेरा अंतर्मन।

लड़ाई अपने आप से कर
विषयों को पटखनी धर,
जीवन में संग्राम कारगर
कहता है मेरा अंतर्मन।

किसी के तू काम आ
सद्गुरू के शरण जा,
रामनाम नित्य लेते जा
कहता है मेरा अंतर्मन।

शब्द साधना करो

भाई रे, शब्द साधना करो,

जो शब्द आत्मलीन करे, ऐसे जीवन संवारो।।धृ०।।

एक शब्द सुखरास है,

दुजा शब्द दुखरास है।

सत्कर्मी को दृढाते है, ऐसे शब्दों को धारो।।१।।

एक शब्द प्रेम धरे है,

दुजा विकल करे है।

विवेकीजन अपनाते हैं, ऐसे शब्द स्वीकारों।।२।।

एक शब्द अनुपम है,

दुजा शब्द नमकीन है।

सद्गुरू जो लखाते है, ऐसे शब्द ग्रहण करो।।३।।

गजल बन गई जिंदगी

शब्दों का साज चढा जब से,
गजल बन गई जिदंगी ये।

शब्दों के लिये लालायित से,
तुम्हारे आते खुशगंवार ये।

जो लब पर आते कतराते,
सहज जीवन मे उतरे ये।

जिदंगी को मतलब दिलाते,
कभी शेर बन के उभरे ये।

तुम्हारी सुरत को गजल कहते,
प्रेम की गंगा में गोते लगाते ये।

इर्शाद फमति अपने आप से,
मौन होकर गजल कहते ये।।

शंखनाद

अच्छे सात्विक कार्य हेतु
शंखनाद किया जाता है,
ना जाने क्यों दुनिया सुनकर
अनदेखी अनसुना कर देती है।।

श्री कृष्ण ने शंखनाद कर
धर्मरक्षण का आव्हान किया,
अधर्म अनाचार न करने हेतु
हम सबको सचेत किया।

शंखनाद जो नही समझ पाये
देखो उनका पतन हुआ,
शंखनाद जो समझ पाये
सोचों उनका उद्धार हुआ।

देखो जीवन में कुछ करने का
अच्छा मौका मिला है,
स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत का
देखो शंखनाद हुआ है।

कुम्हारन

बाजार के रास्ते पर कुम्हारन
माटी के दिये बेच रही है,
उसके दीये खरीदे कोई न
फिर भी वह निराश नही है।

आज दिखे जगमग जगह-जगह
बिजली के दीये-लडियों की है,
कैसे होगा उसका उदर निर्वाह
फिर भी नही वह चिंतागुर है।

माटी से ही बना ये देह
जिसमें आत्मज्योति जागती है,
सत्कारण में लगे मानवदेह
ज्ञान प्रकाश जब फैलाती है।

वैसे ये माटी के दीये
हमें संदेश प्रदान करते है,
अंतर्मुख होने के लिये
हमें सहज बाध्य करते है।

दीपावली के दो ही दीपक
पर कितने सार्थक होते है,
आंतरिक प्रेमभावनाओं को
देखो आवाज देते रहते है।

निराश नही है कुम्हारन जो
माटी के दीये बेच रही है,
आशा के दीये जला कर वो
संस्कार पोषित कर रही है।

हमसफ़र

ऐ मेरे हमदम हमसफर
तु तो बड़ी लाजवाब है,
तेरी ही साथ संगत से
जीवन मेरा गुलजार है।

तूने दी नन्ही कलियां
धीरे-धीरे फुल रही है,
संस्कार की सिंचाई से
गुलशन मेरा आबाद है।

कदम कदम पे साथ तेरा
मुश्किलें आसान करे है,
तेरा सत्पथ पे साथ चलना
जीवन सार्थक लगे है।

ये मेरे हमदम हमसफर
तेरे बिना कुछ न सुझे है,
जब जब तू चले साथ
शुल भी फुल लगे है।

मनमीत

गुरू हमारे ज्ञान जौहरी
मन की बात वो जाने,

दुबिधा दूर करे हमारी
उन्हें क्यों न मनमीत माने।

गुरू सच्चे मनमीत हमारे
हमें सत्य की राह लखाये,

माता-पिता को मनमीत माने
ताके जीवन समृद्ध हो जाये।

बरसो रे मेघा

खुशहाली का संदेश सुहाना,
बरसों मेघा मन भाये बरसना।।
बरसो रे मेघा............

धरती प्यासी अंबर प्यासा,
जीवमात्र पानी को तरसता।
बरसो रे मेघा............

जीव का पानी पानी करना,
तेरा जतीने की आस बंधाना।।
बरसो रे मेघा............

तेरे बिना मेघा जी घबराया,
जीव जंतु को व्याकुल पाया।
बरसो रे मेघा............

वसुंधरा को सदा सजने दो,
सुंदर हरित वस्त्र से सजने दो।
बरसो रे मेघा ....

मनुष्यता धरती को सिंचेगी,
चेतना को पल्लवित करेगी।
बरसो रे मेघा............

भरी बरसात में

ये कौन चुपके से आ गया भरी बरसात में,
दिल कैसे चुरा के ले गया भरी बरसात मे।

अकेले तन्हा गुमसूम सहमी सी बैठी थी मैं,
दिल का द्वार खटखटा गया भरी बरसात में।

न थी उम्मीद आयेगा मिलने मुझ नाचीज से,
गमशीन माहौल बदल गया भरी बरसात में।

तन्हाई को अपना हमदम माना था मैंने,
हमदर्द बनके कौन आ गया भरी बरसात में।

जीवन जीने की तमन्ना को खो बैठी थी मैं,
जीना खुशनुमा कर गया भरी बरसात में।

पानी की टपकती बूंदो कुछ सिखा है मैंने,
प्रेम की परिभाषा सिखा गया भरी बरसात में।

दिल के हाथों मजबूर पाया था खुद को मैंने,
चितचोर के आगोश में सुकून पाया भरी बरसात में।

कृषिवल

हे कृषिवल हे कृषिनायक
तेरा नही कोई सानी है,
हे धरतीपुत्र हे किसान
तु धरती मां का सपूत है।
कड़ी दोपहरी धुप में
तु हरदम से तपता है,
रात के गहन अंधेरे में
जाग जाग खेत संजोता है।
अपने आप में अनुठा कृषिवल
भरण पोषण का माध्यम है
सोने की फसल उगाता भारत
सोने की चिडियां कहलाता है।
प्रकृति की गोद में रहकर
पर्यावरण को संजोता है,
दूसरों को सुख प्रदान कर
खुद गरीबी भुखमरी सहता है।
मेहनत से जो फसल उगाये
वही तो होते हलाल है,
बैठे बैठे दलाल भाव लगाये
ताको कौन हवाल है।
फिर क्यों आत्महत्या करता
खेत की सच्चा तेरा रण है,
अपने जितोड़ मेहनत से
धरती को सुजल बनाना है।

बाल दिवस

पंडितजी का जन्मदिन है
चलो बाल दिवस मनाते है,
गुलाब से लगते उन्हे प्यारे
उन बच्चों को दुलार देते है।
बच्चे होते हे मन के सच्चे
पाक दामन साफसुथरे होते है,
वो चाहते है प्यार मिले उन्हें
क्या हम थोड़ा समय देते है?
पंडितजी जानते थे महत्ता
वो देश के भविष्य होते है,
बालकों पर ही तो निर्भर
भारत देश का विकास है।
कांटो पर ही खिलता गुलाब
जानों बच्चे मेहनतकश है,
गुलाब सी सुगंध फैलाते
भारत देश को समर्पित है।
पंडितजी के कोट पे मुस्काता
गुलाब इसका प्रतीक है,
आओ हम बच्चो को सहजे
ये बाल दिवस का नारा है।
जीवन के आपाधापी में
आज हर कोई व्यस्त है,
थोड़ा समय तो निकालो यारों
बच्चे आनंद का स्त्रोत है।

शिक्षक दिन

शिक्षक और गुरू में
सबसे बड़ा अंतर यही,
हर गुरू शिक्षा प्रदाने
हर शिक्षक गुरू नही।
शिक्षक को गुरूसम जान
शिक्षक दिन मनाते है,
ऐसे आदर्श शिक्षक हम
आज बिरला ही पाते है।
निःस्वार्थ शिक्षण सेवा से
भाव का आज विलय हुआ,
शिक्षा के बाजारीकरण से
परमार्थ भाव गायब हुआ।
पाठशाला में कम ही दिखे
इधर उधर नजर आते है,
ज्यादातर शाम को देखे
मधुशाला में पाये जाते है।
मैं बली बली जाऊं उन पर
जो आदर्श शिक्षण सेवक है,
जो सिर्फ उदर भरण न कर
नवपीढ़ी सृजित करते है।
धन्य है डॉ. राधाकृष्णन जी
उनको कोटी कोटी नमन है,
जिनके आदर्शो से सिख कर
आज नवभारत प्रगतिशील है।

हिन्दी

हिन्दी हमारी
संस्कृत की सुपुत्री
हो बलिहारी।
होवे मिश्रण
मेंहदी सी लगती
है निखरती।
हिन्द की शान
राजभाषा महान
रखियों आन।
हिन्दी दिवस
पखवाड़ा मनाओ
उल्हास पाओ।।

कश्मीर हमारा है

खुबसूरत
कश्मीर हमारा है
हमें प्यारा है।
अजस्त्र बेडी
तीन सौ सत्तर है
अब हटी है।
एक हिन्दोस्तां
कश्मीर मुस्काई है
शांति पाई है।
आगे बढाना
विकास करना है
ये जन्नत है।

सामाजिक चेतना

सामाजिक चेतना बिना
समाज निष्क्रिय निष्प्रभ,
सामाजिक चेतना बिना
समाज मन स्वैर अचेत।

सामाजिक चेतना बिना
समाज को भी छूटे माज,
सामाजिक चेतना बिना
निष्प्राण दिखे समाज।

चेतना बिना सबकुछ अधुरा
व्यक्ति का न हो उबारा,
छूटी जाये जब संस्कारा
समाज को न होवे गंवारा।

साधु संत सज्जन सारे
चेतना प्रदान करते आये,
सामाजिक चेतना स्वीकारें
समाज को सशक्त बनाये।

सामाजिक चेतना का महत्व
अनन्य साधारण है हे भाई,
इसी पर ही तो टिकी
भारतदेश की प्रगति रे भाई।।

जिंदगी

हां, जिंदगी हूं मैं
जो है सही माने में जिंदा
बस उन्ही की हूं मैं।
जिंदा तो सभी है नजर आते
दिशाहीन होकर चलते
आत्मसम्मान को खोते
नारकीय जीवन जीते
ऐसी जिंदगी में राम नही।
जिंद बनकर दार्शनिक आये
जिंदगी की गुर सिखाये,
जीने का मतलब बतलाये
वह वाणी जीवन में है ढालते
वो ही सही जिंदगी है जीते।
जिंदगी ऐसे जियो के
काम किसी के आ जाये,
प्रेम की दुशाला ओढ के
खुद को कुर्बान कर जाये।
जो मनुष्यता से जिये
प्रेम से चले, प्रेम बांटे,
शांति को रहे संजोये
देश के लिये कुछ कर पाये।
बस, उन्ही की हूं मैं
हां, जिंदगी हूं मैं।।

नशाबाजी बुरी बला

नशाबाजी मत कर प्यारे,
मत गुंग हो जाती है,
पल्लु का दाम खर्च के प्यारे,
मुंह में मक्खियां जाती है।
नशे की लत बड़ी बुरी
शरीर शिथिल हो जाता है,
हाथ पांव कपकपाने लगते
कामकाज नही हो पाता है।
जिसे नशे का चस्का लगे
वाम मार्ग में लग जाता है
नशा सिर चढ कर सदा बोले
समझ बुझ सब खो देता है।
नशाखोर को कोई न पूछे
सारे दूर दूर उससे रहते है,
ना जाने वह कब क्या रके
भरोसा कोई नही करते है।
जीवन में जो कुछ कर पाते
वे नशाबाजी से दूर रहते है,
सात्विकता से व्यसनमुक्त रहते
सदा सादा जीवन जीते है।
हे मनुष्य, संयम तु कर ले
नशा बडी बुरी बला है,
रोडा जान तु ये उत्कर्ष में
रे मान, संत जो कह गये है।

होली

मन भवन
आनंद का संसर्ग
होली का पर्व।

मन स्तंभन
भुमि पर है गाड़ा
भव का डंडा।

मन रंजन
जीवन रंगारंग
भक्ति में दंग।

मन सुरंगी
प्रभुरंग नहाये
कृतार्थ पाये।

मन बंधन
होलिका का दहन
सत्कर्मी जान।

भक्त कुशल
खुद होलिका जली
सीख है मिली।

प्रभु लौलीन
पक्का है भक्तिरंग
न उड़े रंग।

मन रंगाओ
कुशलता रे पाओ
होली मनाओ।।

क्या कहने

लाजवाब हुस्न के क्या कहने,
तु तो कुदरत की निजात है।

स्त्री रूप धारे वाह क्या कहने,
पुरूष को कदरदाना बनाया है।

कुदरत की नजाकत क्या कहने,
इसी में तो सारे समाहित है।

धरती का रूपश्रृगांर क्या कहने,
देवता अवतार हेतु लालायित है।

रानी पद्‌मावती के चर्चे क्या कहने,
एक नजर देखने को कायल है।

लाजवाब हुस्न के क्या कहने
हाथ लगे पर हाथ न आये है।

गुण गौरव का बखान क्या कहने,
तु तो लाजवाब नायाब है।

इसके कदरदान के क्या कहने,
जो सुंदर शब्दों में पिरोते है।।

मजदूर हूं मैं

हां मजदुर हूं इंसान हूं मैं,
न करता कोई शिकायत मैं।
मिले जो काम करता हूं मैं,
ईमान की रोटी खाता हूं मैं।
कड़ी धुप में श्रम करता हूं मैं,
मिले उसी में गुजारा करता हूं मैं।
काम का मारा फटेहाल हूं मैं,
संतुष्ट जीवन सदा जीता हूं मैं।
इमारत के मूल में बसता हूं मैं,
ताज चुनाने वाला मजदूर हूं मैं।
कभी नही इतरात हूं मैं,
सदा गरीबी में रहता हूं मैं।
दुनिया का बोझ उठाता हूं मैं,
चिंता को पटखनी देता हूं मैं।

जीत

मन के जीते जीत है, मन के हारे हार।
अंकुश तेरे हाथ है, रे मनुज तु संवार।।१।।
मन बड़ा चंचल है, न होने दे सहज संवार।
रामनाम की डोरी है, रख रस्सी खेंचकर।।२।।
विषयों का गहन घेरा है, जीत नहीं आसान।
यह चक्रव्युह तोड़ना है, होवेगी घमासान।।३।।
जीवन एक संग्राम है, जीत सके तो जीत।
अपने आपसे लड़ना है, कहलावेगा रणजीत।।४।।

प्रार्थना

नही चाहिये प्रभु मुझे
सोना चांदी धन,
बस तु बरसा दे
तप्त धरती पर धन।
उठा अपने हाथ को,
मेघो को जगाना जरा,
कह उन्हे बरसने को
चलता है राज तेरा।
प्यासी धरती, प्यासे लोग
आंखो से बहे नदी,
सुखे ताल, सुखे खेत
लगे प्यासी वादी।
मूक जानवर क्या कहे
जंगल को भी आशा,
जल ही तो जीवन है
जीव कैसे रहे प्यासा।
बीज पडेंगे, पेड़ लगेंगे
हरित सजेगी धरती,
पर्यावरण संरक्षण करेंगे
अन्यथा होगी क्षति।
मान न सम्मान चाहुं
ना ही अच्छे वसन,
हे प्रभु बस यही चाहुं
खिले खेत खलिहान।।

धड़कन

धड़कते दिलों की धड़कनों से
जीवन भर का साथ है मेरा,
इनसे हमेशा बातें करता हूं मै ....
कभी इकरार, कभी तकरार
कभी आभार, कभी प्रहार,
कभी एल्गार, कभी खुशगंवार
ऐसी मन की बात करता हूं मैं ....
दीदार के लिये दिल धड़कता है
धीरे धीरे धड़कने बढ़ती जाती है,
चाहे हो जीवन का अंतिम चरण
प्रभु दर्शन का अभिलाषी हूं मैं ....

चांद

ए चांद, तु देख रहा है ना
मेरा जीवन खुली किताब सा,
चाहे जीतने पन्ने पलटना,
तु लगता मुझे हमदम सा।
मेरी बात तु सुन रहा है ना
लिखती हूं मैं हृदय की बात,
मैं साजन की बिरहन हूं ना
कलम की मिली है सौगात।
आंखे नम दिल में है वेदना
कागज पर डारे है डेरा,
महनी शब्दों में है उसे पिरोना
ए चांद, बस तेरा सहारा।।

दीर्घायु

दीर्घायु हुआ तो क्या हुआ, जैसे ढोर गंवार।
मुख से कुछ बोले नहीं, सहे घनेरी लात।।१।।
दीर्घायु हो जीना व्यर्थ है, जीव का न उद्धार।
परमार्थ कभी किया नहीं, स्वार्थ की मंझधार।।२।।
सच्चे दीर्घायु वो ही भले, सदा जो परोपकारी।
मनुष्यता के फुल खिले, सेवा की बलिहारी।।३।।
सिर्फ उमर बढ़ने से, दीर्घायु न होय।
प्रदीर्घ जीवन कैसे जीये, बिरला जाने कोय।।४।।
दीर्घायु अगर होना है, आध्यात्म को धार।
कर्म भक्ति और ज्ञान से, जीन खुशगंवार।।५।।
दीर्घायु साधुसंत भले, निरामय हो जीते।
विषयों को न लगाते गले, पाक दामन रहते।।६।।
दीर्घायु होना सब चाहते, होते कोई कोई।
खान पान परहेत करते, सात्विक रहे सोई।।७।।
दीर्घायु ऐसा न भला, आशीष न ले कोई।
अच्छे कर्म किये नही, न फटके पास कोई।।८।।
दीर्घायु का महत्व जान ले, सियांना बन के जी।
प्रभु के काज कुछ कर ले, हाथ लगेगी बाजी।।९।।

घायल आत्मा

मधुमासी हवाओं में
बारूदी गंध भर गया,
शैतानी वादी-ए-फरिश्तों में
आसमां से उतर आया।
घायल आज फिर से
हिन्द की आत्मा कर गया,
खुदा के बंदो की हत्या
शैतान बन कर गया।
इंसानियत का पुतला ही
आज कातिल बन गया,
कितने नौजवानों के खून से
आज फिर तिरंगा रंग गया।
सुनी राखियां कितनों की
गोद भी सुनी कर गया,
सिंदूर से सजी मांगो को
लालोलाल रक्त कर गया।
छत्र छाया सर माया
नन्हे मुन्नो का उजाड़ गया,
वादी-ए-जन्नत को
जहन्नुम बना गया।
फिर शैतान जमी पर
वहशियत पर उतर आया,
मधुमासी हवाओं में
बारूदी गंध भर गया।

लाजवाब

हे मां भारती, लाजवाब हो तुम,
शत शत नमन तुमको।

महापुरूष जो तेरे उर से उत्पन्न,
करते तेरे लिये अपना देह अर्पण
शत शत नमन तुमको।

अंचल से जो बहे भक्ति की धारा,
संत व भक्तों के वाणी का सहारा
शत शत नमन तुमको।

तेरी गोद में बसी है प्रकृति अपार,
इसी में मिलते जड़ी बुटी के भंडार
शत शत नमन तुमको।

तु हे मां भारती नौरत्नों की खाण,
इसी में लगा स्त्रीशक्ति का प्रमाण
शत शत नमन तुमको।

सत्य, अहिंसा, त्याग का परिमाण,
अतुल्य प्रेम का प्रतिक ताज जान
शत शत नमन तुमको।

आओ, इस पर हम जान छिड़काये,
भारती को स्वच्छ लाजवाब बनाये
शत शत नमन तुमको।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - **संजय सुक्रीतदास बर्वे**

जन्म - २२ जुलाई १९६९, नागपुर (महाराष्ट्र)

शिक्षा - विद्युत अभियांत्रिकी में पदविका

प्रकाशित साहित्यकृति -

१.रंगपंचमी २.कबीरपुत्र कमाल ३. कबिरांचा फगवा
४. भजनाचा व्यवहार ५. कबीर पदावली
६. गुरुग्रंथसाहेबातील कबीर ७. कबीर दोहावली
८. रजनीगंधा ९. कबीर गाथा.

सम्मान व पुरस्कार -

महात्मा गांधी व नोबल इंडिया इंटरनॅशनल अवॉर्ड, भारत गौरव, गुरू गौरव, महाराष्ट्र ज्योती गौरव, विद्यावाचस्पती, हिंदी रत्न, भारतीय भाषा रत्न, विदर्भ रत्न, महाराष्ट्र भूषण, साहित्य भूषण, महाराष्ट्र दर्पण, स्वामी विवेकानंद, जीरो माईल समाज रत्न, साहित्य शिरोमणी, पुस्तक आयडॉल, भाषा समन्वयक, साहित्य रत्न आदि।

मराठी में अनुवादित १००० कबीर वाणी का अग्रवाल बुक ऑफ (वर्ल्ड) रेकॉर्ड में नामांकन।

कवि, लेखक, संत साहित्य के अभ्यासकर्ता, चित्रकार, व्यंग्य चित्रकार, महंत व कबीर वाणी के प्रचारक।

घुमंतुभाष - ९९२११६६६३८
संपर्क - कोष्टिपुरा, सीताबर्डी, नागपुर (महाराष्ट्र) ४४००१२

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क– ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-047-6
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध